Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 3 | MARCH 2020

सोशल मीडिया : समाज में महत्त्व और चुनौतियाँ

मीनू तंवर[1]

[1] व्याख्याता (समाजशास्त्र), चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

ABSTRACT:

सोशल मीडिया की ताकत और महत्त्व से देश और समाज अब पूरी तरह से अवगत हो चुका है। वर्तमान में सोशल मीडिया ने पूरे विश्व को जोड़ रखा है। समृद्ध लोकतान्त्रिक मूल्यों एव अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए जाना जाने वाला हमारा भारत देश भी इस नवोदित सो"ल मीडिया के प्रभाव में है। सोशल साइट्स ने समाज को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का सशक्त माध्यम दिया है और जानकारियो का अथाह भंडार है। सोशल मीडिया ने अपनी खूबियों के बीच अपनी खामिया को इतना विस्तार दे डाला है कि एक चुनौतीपूर्ण स्थिति निर्मित हो चुकी है।सोशल मीडिया सामाजिक व्यवहार के अन्दाज में भी बदलाव ला रहा है।मीडिया के इस बदले हुए स्वरूप में विश्वसनीयता का संकट बढ़ा है। यदि इस संकट को दूर कर लिया जाए तो इस नये मीडिया को उपादयता और भी बढ़ सकती है। सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलू को देखते हुए इसके लिए भी वह प्रतिबंध अपेक्षित है, जो अन्य माध्यमों पर आपत्तिजनक व मानहानी से जुड़े संदर्भों में लागू होता है। अतः व्यावहारिक कानून के रूप में नियमन व नियंत्रण से इंकार नहीं किया जा सकता है।तकनीकी युग के नये परिवे"ा में हमें सो"ल मीडिया की बहुआयामी भूमिका को समझते हुए कदम उठाने होंगे।

KEYWORDS:

अभिव्यक्ति, लोकतंत्र, इंटरनेट, वेबसाइट, वैचारिक प्रदूषण, सोशल मीडिया, ग्लोबल विलेज, सोशल नेटवर्किंग साइट्स,तकनीकी युग।

परिचयः

मीडिया यानि माध्यम, सोशल मतलब सामाजिक। इसे दूसरे शब्दों में कहे तो सामाजिक माध्यम। सोशल मीडिया की ताकत और महत्त्व से देश और समाज अब पूरी तरह से अवगत हो चुका है।विगत वर्षों में अरब देशो में लोकतात्रिक आन्दोलनो को मजबूत बनाने की बात हो या भारत में अन्ना हजारे के आन्दोलन के प्रचार–प्रसार का सवाल या फिर दिल्ली में 2012 में बर्बर दुष्कर्म के बाद उपज आक्रामक जनाक्रो"ा को दिशा देने का प्रयोग इन सारी घटनाआ में सोशल मीडिया ने बेहद अहम भूमिका निभाई है।

विवेचना :

मीडिया और समाज का रिश्ता बहुत गहरा है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था में समाज के प्रति मीडिया की जवाबदेही भी ज्यादा है। यहो कारण है कि उसे ''लोकतन्त्र का चौथा स्तम्भ'' कहा जाता है। मीडिया ने समाज के बोच अपनी सार्थकता को स्थापित किया है। वर्तमान परिपक्ष्य में समाज की अपेक्षाए मीडिया से बढ़ी है और उसे नागरिका के अधिकारो की लड़ाई वाले माध्यम के रूप में देखा जाता है। मीडिया ने सदैव अपने सामाजिक उत्तरदायित्वों को बखूबी निभाया है। इसके लिए संघर्ष किया है, कुर्बानिया भी दी ह। मीडिया ने समाज में अपनी भूमिका का सुदृढ़ परिचय देते हुए अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को श्रेष्ठ आयाम दिए और यदि समाज दिग्भ्रमित हुआ तो उसे भी दिशा बाध कराने का काम किया। सामाजिक जागरूकता लाने में मीडिया का अतुलनीय योगदान रहा है। वर्तमान में सोशल मीडिया ने पूरे विश्व को जोड़ रखा है। समृद्ध लोकतान्त्रिक मूल्यों एव अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के लिए जाना जाने वाला हमारा भारत देश भी इस नवोदित सो"ल मीडिया के प्रभाव में है। हम मीडिया के इस चेहरे की उपादेयता से इंकार नही कर सकते, क्योंकि इसने ''ग्लोबल विलेज'' की अवधारणा को साकार करते हुए वैश्विक स्तर पर जहाँ ज्ञान और जानकारी के भंडार को समृद्ध बनाया है वही नजदीकिया भी बढ़ाई है।

एक और जहां इंटरनेट ने दुनिया बदल दी है मीडिया जगत से समाज भी अछुता नही है। मीडिया ने परम्परागत तौर–तरीको से हटकर कम्प्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल, सोशल साइटस ने सूचना के क्षेत्र में नई क्रान्ति ला दी है। फेसबुक, यूट्यूब, ट्विटर जैसी सोशल साइट्स ने समाज को अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता का सशक्त माध्यम दिया है। अब लोगों को अपनी प्रतिक्रिया जानने, विचार देने का भी सशक्त माध्यम है। यहो कारण है कि समाज में सोशल मीडिया का प्रभाव बढ़ा है। युवा वर्ग तो इसका दिवाना है। सोशल नेटवर्किंग साइटस जानकारियो का अथाह भंडार है। सच तो यह है कि इंटरनेट आज विकसित जीवन शैली वाले वर्ग के जीवन का एक ऐसा हिस्सा बन चुका है जिसके बिना कुछ भी कर पाना असंभव सा प्रतीत होता है।

सोशल मीडिया ने अपनी खूबियों के बीच अपनी खामिया को इतना विस्तार दे डाला है कि एक चुनौतीपूर्ण स्थिति निर्मित हो चुकी है। इसकी खामियों को लेकर हमारी चिंता स्वभाविक भी है, क्योकि हम अपनी संस्कृति का विकृत चेहरा दुनिया के समक्ष नही रख सकते। सोशल मीडिया को सामाजिक जीवन का दर्पण भी कह सकते है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि इस ऑनलाइन समाज का सही दिशा की तरफ मोड़ा जाए। सोशल मीडिया सामाजिक व्यवहार के अन्दाज में भी बदलाव ला रहा है। प्रेम, मित्रता, परिवार, घनिष्ठता, भाषा और अभिव्यक्ति किसी वस्तु को पसन्द या नापसंद करना आदि के बारे में हमारे पूरे दृष्टिकोण में परिवर्तन आ रहा है। एक क्लिक करने मात्र से हम चित्र, विडियो, संगीत, दस्तावेज और तमाम तरह की सूचनाएं आदान–प्रदान करने लगे है। इस माध्यम की शक्ति और लोकतन्त्र को सुदृढ़ बनाने की उसकी संभावनाओं को अब विश्व की तमाम सरकारो ने स्वीकार कर लिया है। सोशल मीडिया को अब एक ऐसे मंच के रूप में देखा जा रहा है जिससे सरकारी विकास कार्यक्रमोंसे लोगो को जोड़ा जा सकता है;भ्रष्टाचार पर काबू किया जा सकता है और लोगा को सशक्त बनाया जा सकता है परन्तु यह कहना सर्वथा उचित नहीं होगा कि यह माध्यम अपने आप में ही ये सभी लक्ष्य प्राप्त कर सकता है।

इसमें कोई दो राय नही है कि मीडिया के बदले हुए स्वरूप ने सूचना एवं संचार को नये आयाम देते हुए राजनीति,समाज, कारोबार,कला संस्कृति एंव साहित्य के नये क्षितिज को छुआ है किन्तु इसकी कुछ कमिया भी है जिन पर दृष्टिपात करना जरूरो है। नये मीडिया ने सूचनाओ के लोकतांत्रिक संचार की रचना तो की है किन्तु अक्सर उन्मुकता के रूप में ये अतिवाद को भी बढ़ावा देती है। इससे उच्छखलता एंव अनुशासनहीनता को भी बढ़ावा मिला है। सोशल मीडिया के जरिये व्यक्तिगत सूचनाएं सामने आती है जिनकी स्तरीयता और सत्यता को परखने का कोई पैमाना हमारे पास नही है। इससे वैचारिक पदूषण भी बढ़ा है। साइबर क्राइम के रूप में नये–नये छल–प्रपंच सामने आ रहे है। अश्लीलता और आंतक को बढ़ाने वाले घातक अवयव भी इसमें मौजूद है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि मीडिया के इस बदले हुए स्वरूप में विश्वसनीयता का संकट बढ़ा है। यदि इस संकट को दूर कर लिया जाए तो इस नये मीडिया को उपादयता और भी बढ़ सकती है।

सोशल मीडिया के नकारात्मक पहलू को देखते हुए यह प्रश्न अहम हो गया है कि सामाजिक मीडिया समाज का एक अच्छा स्वरूप देने के लिए है या उसमें विकृतियाँ पैदा करन के लिए। इसके सकारात्मक व उपयोगी पक्ष को देखते हुए इसे पूरे तौर पर एकदम से प्रतिबंधित भी नहीं किया जा सकता है हालांकि चीन, पाकिस्तान और बाग्लादेश जैसे हमारे पड़ौसी देशा में अ"लील सामग्री परासने के सभी इलेक्ट्रॉनिक संचार का नियन्त्रण केंद्रोय संचार आयोग करता है। इंटरनेट भी इसी के अन्तर्गत आता है। इतना ही नही अमरोका, कनाडा और ब्रिटेन जैसे दे"ाों ने अपने स"ास्त्र बला को यहाँ तक निदे"ा दे रखा है कि वे फेसबुक से सभी व्यक्तिगत जानकारियाँ हटा दे ताकि आतंकवादी संगठन संवेदन"ाील जानकारिया हासिल ना कर पायें। सो"ल साइटस पर नियन्त्रण और नियमन इसलिए भी आव"यक हो गया है क्योकि इनके माध्यम से सिर्फ अ"लीलता को ही बढ़ावा मिल रहा है। इस सामाजिक मीडिया के जरिये आतंकी संगठन फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजकर नये दोस्त बनाकर उन्हे अपनी विचारधाराओं का समर्थन करवाते है।

वर्तमान समय में सो"ाल मीडिया समाज का आधार माना जाने लगा है। अतः यह आव"यक है कि इस ऑनलाइन समाज को सजाया और सवारा जाए नकि इस अराजकता व अ"लीलता की अंधेरी सुरंग में प्रवे"ा करता देखते हुए हम हाथ पर हाथ धरे बैठ रहे। इसके नियमन के साथ–साथ जनजागृति भी आव"यक है। इंटरनेट अभिव्यक्ति के दूसरे माध्यम से अलग नहीं है। अतः इसके लिए भी वह प्रतिबंध अपेक्षित है, जो अन्य माध्यमों पर आपत्तिजनक व मानहानी से जुड़े संदर्भो में लागू होता है। अतः व्यावहारिक कानून के रूप में नियमन व नियंत्रण से इंकार नहीं किया जा सकता है।

निश्कष :

मीडिया ने समाज को सही दि"ाा और गति प्रदान की है और वर्तमान मे भी कर रहा है परन्तु भविष्य में इसमें कुछ सुधार की अपेक्षा है क्योकि मीडिया का कार्य सिर्फ सूचना एंव मनोरंजन का ही नही बल्कि लोगो को हर क्षेत्र में जागरूकता करते हुए स्वच्छ और नैतिक जनमत तैयार करना भी है। लोग क्या चाहते है यह जरूरी तो है परन्तु उसका समाज पर क्या असर पड़ेगा यह देखना उससे भी ज्यादा जरूरी है। तकनीकी युग के नये परिवे"ा में हमें सो"ाल मीडिया की बहुआयामी भूमिका को समझते हुए कदम उठाने होंगे। सो"ाल मीडिया पर किसी प्रकार की पाबंदी फासीवादी साच होगी। समाज के ि"ाक्षित, बाद्धिक और संवेदन"ाील होने के साथ सो"ाल मीडिया के सकारात्मक पक्ष का हम सदपयोग कर पायेंगे। फिलहाल यह संक्राति का दौर है। एक नया माध्यम हमारे दैनिक जोवन का हिस्सा बन रहा है तो हम इससे नजरें नही फेर सकते। सो"ाल मीडिया अभी विकासोन्मुख चरण में है और वि"वभर में विभिन्न समुदायो द्वारा संवादों और संचार का एक स"क्त माध्यम है। भारत में हम अनिवार्य रूप से सो"ाल मोडिया के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना होगा ताकि संचार एंव सबद्धता के तेजी से बढ़ रहे इस अदभुत माध्यम के प्रगतिगामी पहलुओ का सुनि"चत किए जा सके और इसके प्रत्यावृर्ती तत्त्वों को दूर किया जा सके।

REFERENCES

1. गोयल, एस. एवं गोयल, एस.: *भारतीय सामाजिक व्यवस्था.*
2. महरा, गुप्ता, शर्मा एवं श्रीवास्तव :*वर्ग विचारधारा एवं समाज.*
3. मदान, जी.आर.:*विकास का समाज"ाास्त्र.*
4. राधाकृष्णन, एस.:*भारतीय संस्कृति.*
5. शर्मा, वो. पी.:*भारतीय समाज– मुद्दे और समस्याएं.*
6. अस्थाना, एन. सी. एवंनिमल, ए.: *अरबन टेरोरिज्म– मिथ्स एंड रियलिटीज.*